॥ श्रीः ॥

सुखदा आयुर्वेदग्रन्थमाला

तृतीयं पुष्पम्

## रसमञ्जरी

# सन्दर्भकोशः


परिष्कर्ता सम्पादकश्च

## डॉ. नीलेश जोशी



॥ग्रन्थ एव गुरुः॥

eBook Publication Pvt. Ltd.®

प्रथमावृत्तिः २०१९, ख्रिस्ताब्दम्

[redacted]

|| श्रीः ||

सुखदा आयुर्वेदग्रन्थमाला

तृतीयं पुष्पम्

श्रीशालिनाथविरचिता

# रसमञ्जरी सन्दर्भकोशः

परिष्कर्ता सम्पादकश्च

**डॉ. नीलेश जोशी**

शास्त्री (व्याकरणम्), एम.ए. (संस्कृतम्), पी.एच.डी.

वरिष्ठभाषाशास्त्रज्ञः, सं.वि.अ.विभागः, भा.प्रौ.सं. मुंबई

**Senior Linguist, Dpt. of Computer Science and Engineering, IIT Bombay, Mumbai**

॥ग्रन्थ एव गुरुः॥

eBook Publication Pvt. Ltd.®

प्रथमावृत्तिः २०१९, ख्रिस्ताब्दम्

# रसमञ्जरी सन्दर्भकोशः

**परिष्कर्ता संपादकश्च : डॉ. नीलेश जोशी**

**प्रथमावृत्तिः- चैत्र-शुद्ध-प्रतिपदा।**

**०६ एप्रिल, २०१९**

**प्रकाशक:**

**eBook Publication Pvt. Ltd.**®

4/47, उदय को. हौ. सोसायटी,

आरे रोड, गोरेगाव पश्चिम,

मुंबई, महाराष्ट्र, भारत, ४०००६२

**Telephone:** +91 7038164022

**Email:** publicationebook@gmail.com

**Website:** https://archive.org/details/@ebook_publcation

© **सर्वेऽधिकाराः सम्पादकेन सुरक्षिताः।**

|| Shri ||

Sukhada Ayurveda Book Series No.3

# Concordance of Rasamañjarī

Edited by


**Dr. Nilesh Joshi**

**शास्त्री (Grammar), M.A. (Sanskrit), Ph.D.**

**Senior Linguist, Dpt. of Computer Science and Engineering, IIT Bombay, Mumbai**



॥ग्रन्थ एव गुरुः॥

eBook Publication Pvt. Ltd.®

**First edition, April 2019**

# eBook Terms & Conditions

## 1. This eBook* may be

a. Distributed without modification or sale.

b. Copied for personal and educational use.

c. Printed for personal and educational use.

## 2. This eBook* may NOT be

a. Sold individually or as part of package.

b. Modified in any way.

c. Reversed-engineered.

**This eBook* and all its content including images are Copyright © 2019 Dr. Nilesh Joshi- All rights reserved.**

***eBook refers to this PDF and any of its content including pages and images in either electronic or printed form.**

# सम्पादकीयम्

आयुर्वेदीयविद्याज्ञात्रा परमभगवता धन्वतरिणा समस्तप्राणिवर्गरुजा-प्रशमनार्थं बहुविधग्रन्थरचनानुष्ठिता | तेषु चापि रसविद्या रसशास्त्रं वा रसस्य पारदत्वं संसारपरपारप्रापणहेतुत्वेनायुर्वेदे जनमानसे च साधिष्ठं गरिष्ठं च प्रतीयते | अत एव भिषग्वरेण वैद्यनाथात्मज-शालिनाथेन बहुविधायुर्वेदीयग्रन्थान् परिशील्य दशाध्यायात्मिकायां रसमञ्जर्यां धातुविषशोधनमारणादिकं गुणागुणलक्षणं च पुरस्सरं रससिद्धिसेवनादिकं विवेचितम् |

रसमञ्जरीगतविषयाणामसाधारणमहत्त्वमनुलक्ष्य तस्य सन्दर्भकोशो विरचितः | अत्रास्माभिः पूर्वप्रकाशिता संशोधिता रसमञ्जर्याः आवृत्तिः संदर्भग्रन्थरूपेणोपयोजिता | सापि रसमञ्जरी आन्तर्जाले समुपलब्धा |

अनेनायुर्वेदकल्पतरुं प्रत्यहमुत्तरोत्तरमतिवेलं परिपोषयेयुः विश्वभिषग्वराः संशोधकाः आयुर्वेदविद्यार्थिनश्च | एतादृशदुष्करकर्मणि मादृशस्याशक्तस्य मन्दमतेः प्रभुश्रीरामकृपालाभादेशस्य शिरोधार्यया कृतोऽयं प्रयत्नश्चेद् भारतीयभिषजां किञ्चिदप्युकारजातमुपजनयेत्तदात्मानं सफलपरिश्रमं मन्येय |

**eBook Publication Pvt. Ltd.®** प्रकाशनेनायं ग्रन्थः प्रकाशितस्तथा ebook स्वरूपेण सर्वेष्वान्तर्जालपुटेन वितीर्यते अत आभाराः प्रकटीक्रियन्ते |

- **डॉ. नीलेश-जोशी**

**चैत्र-शुद्ध-प्रतिपदा,**

**६ एप्रिल, २०१९**

| | | |
|---|---|---|
| **अग्निकुमाररसः (१)** | सूतं गन्धं च नागानां चूर्णं | र.म.6.185 |
| **अग्निकुमाररसः (२)** | टङ्कणं रसगन्धौ च समभागं त्रयो | र.म.6.191 |
| **अग्नितुण्डीवटी** | शुद्धं सूतं विषं गन्धमजमोदाफल. | र.म.6.203 |
| **अचिन्ता योगिनी** | नवमे दिवसे मासे वर्षे गृह्णाति | र.म.9.86 |
| **अजीर्णकण्टकरसः** | शुद्धं सूतं विषं गन्धं समचूर्णं | र.म.6.315 |
| **अञ्जनविधिः** | अथ सम्पक्वदोषस्य प्रोक्तमञ्जन.. | र.म.8.1 |
| **अनङ्गसुन्दररसः** | पलद्वयं द्वयं शुद्धं पारदं गन्धकं | र.म.6.307 |
| **अपामार्गशिखाद्यञ्जनम्** | अपामार्गशिखां घृष्ट्वा मधुना | र.म.8.10 |
| **अभ्रकद्रावणम्** | अगस्तिपुष्पनिर्यासमर्दितं सूरणोदरे | र.म.3.61 |
| **अभ्रकमारणम् (१)** | धान्याभ्रकस्य भागैकं द्वौ भागौ | र.म.3.44 |
| **अभ्रकलक्षणम्** | पिनाकं दर्दुरं नागं वज्रमभ्रं चतुर्विधम् | र.म.3.36 |
| **अभ्रकशोधनम् (१)** | धमेद्वज्राभ्रकं वह्नौ ततः क्षीरेण | र.म.3.42 |
| **अभ्रकशोधनम् (२)** | अथवा बदरीक्वाथे ध्मातमभ्रं | र.म.3.43 |
| **अभ्रकसत्त्वपातनम्** | भावितं चूर्णितं त्वभ्रं दिनैकं | र.म.3.58 |
| **अभ्रमारणम् (२)** | धान्याभ्रकं दृढं मर्दयमर्कक्षीरे | र.म.3.46 |
| **अभ्रमारणम् (३)** | म्रियते नात्र सन्देहः सर्वरोगेषु | र.म.3.48 |
| **अभ्रमारणम् (४)** | दुग्धत्रयं कुमार्यम्बु गङ्गापत्रं | र.म.3.55 |
| **अम्लपित्तान्तकरसः** | मृतसूताभ्रलोहानां तुल्यां पथ्यां | र.म.6.184 |
| **अरिष्टदर्शनम्** | यत्कृताभ्यासयोगेन नास्ति | र.म.10.49 |
| **अरिष्टलक्षणम् (१)** | अकस्माच्चित्तविकृतिरकस्मात्पुरुषोत. | र.म.10.5 |
| **अरिष्टलक्षणम् (२)** | यो वा गन्धं न गृह्णाति दीपे शान्ते | र.म.10.8 |
| **अरिष्टलक्षणम् (३)** | विपरीतेन गृह्णाति भावानन्यांश्च यो | र.म.10.12 |
| **अरिष्टलक्षणम् (४)** | कुटिला स्फुटिता वापि सुप्ता यस्य | र.म.10.18 |
| **अरिष्टलक्षणम् (५)** | कर्णहीनं यदात्मानं पश्यत्यात्मा | र.म.10.20 |
| **अरिष्टलक्षणम् (६)** | रात्रौ दाहो भवेद्यस्य दिवा शीतं च | र.म.10.21 |
| **अरिष्टलक्षणम् (७)** | चरणौ शीतलौ यस्य शीतलं | र.म.10.22 |
| **अरिष्टलक्षणम् (८)** | हुङ्कारः शीतलो यस्य फुत्कारो | र.म.10.23 |

| | | |
|---|---|---|
| **अरिष्टलक्षणम् (९)** | अरुन्धतीं ध्रुवं चैव विष्णोस्त्रीणि | र.म.10.24 |
| **अर्शकुठाररसः** | शुद्धसूतं पलैकं तु द्विपलं | र.म.6.326 |
| **अशुद्धहरतालदोषाः** | अशुद्धं तालमायुघ्नं कफमारुत.. | र.म.3.69 |
| **अशोधितवज्रदोषः** | पाण्डुरोगं पार्श्वपीडां किलासं | र.म.3.22 |
| **अष्टधातुशोधनमारणम्** | हेमादिलोहकिट्टान्तं शोधनं मारणं | र.म.5.1 |
| **अष्टवेगाः** | मात्राधिकं यदा मर्त्यः प्रमादाद् | र.म.4.23 |
| **आनन्दभैरवरसः** | दरदं वत्सनाभं च मरिचं टङ्कणं | र.म.6.168 |
| **आनन्दोदयरसः** | पारदं गन्धकं लोहमभ्रकं विषमेव च | र.म.6.206 |
| **इच्छाभेदिरसः** | शुण्ठीमरिचसंयुक्तं रसगन्धक.. | र.म.6.343 |
| **इन्दुधररसः** | शुद्धं सूतं समं गन्धं तुत्थं च | र.म.6.268 |
| **इन्द्रवटीरसः** | मृतं सूतं मृतं वङ्गमर्जुनस्य त्वचा | र.म.6.221 |
| **उदयभास्कररसः** | गन्धकेन मृतं ताम्रं दशभागं | र.म.6.317 |
| **उदरारिरसः** | पारदं शिखितुत्थं च जैपालं | र.म.6.336 |
| **उन्मत्तरसः** | रसं च गन्धकं चैव धत्तूरफलजैर्द्रवैः | र.म.6.124 |
| **उपरसशोधनम्** | सौवीरं टंकणं शंखं कङ्कुष्ठं गैरिकं | र.म.3.97 |
| **उपरसाः** | गन्धकं वज्रवैक्रान्तं गगनं तालकं | र.म.3.1 |
| **उपसंहारपुष्पिका** | वैद्यनाथतनूजेन शालिनाथेन धीमता | र.म.10.58 |
| **ककाराष्टकम्** | कूष्माण्डं कर्कटीं चैव कलिङ्गं | र.म.2.59 |
| **कनकसुन्दररसः** | हिङ्गुलं मरिचं गन्धं पिप्पलीं | र.म.6.133 |
| **कान्तपाषाणशोधनम्** | लवणानि तथा क्षारौ शोभाञ्जनरसे | र.म.3.87 |
| **कापालिका योगिनी** | दशमे दिवसे मासे वर्षे गृह्णाति | र.म.9.88 |
| **कामिनीमदभञ्जनरसः** | शुद्धं सूतं समं गन्धं त्र्यहं कह्लार | र.म.6.301 |
| **कामेश्वररसः** | सम्यङ्मारितमभ्रकं कट्फलं | र.म.6.310 |
| **कालविज्ञानम्** | अथ कालस्य विज्ञानं प्रवक्ष्यामि | र.म.10.1 |
| **कालाग्निरुद्ररसः** | सूताभ्रं ताम्रतीक्ष्णानां भस्म | र.म.6.274 |
| **कासीसगुणाः** | माक्षिकं तिक्तमधुरं मेहार्शःक्षय | र.म.3.86 |
| **कासीसशोधनम्** | सकृद्भृङ्गाम्बुना स्विन्नं कासीसं | र.म.3.85 |
| **किट्टग्रहणम्** | ये गुणा मारिते मुण्डे ते गुणा | र.म.5.68 |

| | | |
|---|---|---|
| **कुमारी योगिनी** | विकारदिवसे मासे वर्षे गृह्णाति | र.म.9.98 |
| **केशरञ्जनम्** | त्रिफलालौहचूर्णं तु वारिणा | र.म.8.21 |
| **क्रव्यादरसः** | पलं रसस्य द्विपलं बलेः | र.म.6.198 |
| **गन्धकतैलम्** | अर्कक्षीरैः स्नुहीक्षीरैर्वस्त्रं लेप्यं तु | र.म.3.13 |
| **गन्धकशोधनम् (१)** | साज्यभाण्डे पयः क्षिप्त्वा मुखं | र.म.3.8 |
| **गन्धकशोधनम् (२)** | गन्धकं शोधयेद्दुग्धे दोलायन्त्रेण | र.म.3.10 |
| **गन्धकशोधनम् (३)** | घृतयुक्तमयोदर्व्या गन्धं वह्नौ | र.म.3.11 |
| **गन्धकोत्पत्तिः** | तत्रादौ गन्धकोत्पत्तिं शोधनं त्वथ | र.म.3.3 |
| **गन्धामृतरसायनम्** | भस्मसूतं द्विधा गन्धं क्षणं | र.म.7.6 |
| **गर्भस्तम्भनम् (१)** | पतन्तं स्तम्भयेद्गर्भं कुलालकर.. | र.म.9.67 |
| **गर्भस्तम्भनम् (२)** | समभागं सितायुक्तं शालितण्डुल | र.म.9.69 |
| **गुणकथनम्** | मारितो देहसिद्ध्यर्थं मूर्छितो | र.म.2.52 |
| **गुरुलक्षणम्** | विद्यां ग्रहीतु मिच्छन्ति | र.म.1.10 |
| **गुरुसेवामाहात्म्यम्** | गुरुसेवां विना कर्म यः | र.म.1.9 |
| **ग्रन्थारम्भः** | श्रीवैद्यनाथतनयः सुनयः सुशीलः | र.म.1.3 |
| **ग्रहणीकपाटरसः (१)** | तारमौक्तिकहेमायः सारश्चैकैक.. | र.म.6.148 |
| **ग्रहणीकपाटरसः (२)** | मुक्तासुवर्णं रसगन्धटङ्कणं घनं | र.म.6.153 |
| **चन्द्रप्रभावटी** | मृतं सूतं मृतं ताम्रं मृतं स्वर्णं समं | र.म.6.143 |
| **चन्द्रशेखररसः** | शुद्धं सूतं समं गन्धं मरिचं टङ्कणं | र.म.6.130 |
| **चन्द्रोदयावर्तिः** | शङ्खनाभिविभीतस्य मज्जा पथ्या | र.म.8.14 |
| **चित्राम्बररसः** | शुद्धसूतं मृतं चाभ्रं गन्धकं | र.म.6.145 |
| **चिन्तामणिरसः** | रसं गन्धं मृतं शुल्बं मृतमभ्रं | र.म.6.209 |
| **छायापुरुषलक्षणम्** | अथातः सम्प्रवक्ष्यामि छायापुरुष.. | र.म.10.43 |
| **छायापुरुषसाधनफलम्** | तीर्थस्नानेन दानेन तपसा सुकृतेन | र.म.10.55 |
| **जलोदरारिरसः** | पिप्पलीमरिचं ताम्रं काञ्चनीचूर्ण.. | र.म.6.338 |
| **जृम्भका योगिनी** | अष्टमे दिवसे मासे वर्षे गृह्णाति | र.म.9.84 |
| **ज्वरराजरसः** | भागैकं रसराजस्य भागस्यार्धेन | र.म.6.57 |
| **तप्तखल्वम्** | अजाशकृत्तुषाग्निं तु भूगर्भे त्रितयं | र.म.1.30 |

| | | |
|---|---|---|
| **ताम्रदोषाः** | न विषं विषमित्याहुस्ताम्रं तु | र.म.5.24 |
| **ताम्रभस्म (१)** | सूतमेकं द्विधा गन्धं यामं कन्यां | र.म.5.29 |
| **ताम्रभस्म (२)** | चतुर्थांशेन सूतेन ताम्रपत्राणि लेपयेत् | र.म.5.32 |
| **ताम्रभस्म (३)** | जम्बीररससम्पिष्टं रसगन्धक.. | र.म.5.34 |
| **ताम्रभस्मगुणाः** | ताम्रं तिक्ताम्लमधुरं कषायं शीतलं | र.म.5.35 |
| **ताम्रशोधनम् (१)** | अग्नौ संताप्य निर्गुण्डीरसैः सिक्तं | र.म.5.27 |
| **ताम्रशोधनम् (२)** | गोमूत्रेण पचेद्यामं ताम्रपत्रं | र.म.5.28 |
| **ताम्रशोधनावश्यकता** | न विषं विषमित्याहुस्ताम्रं तु | र.म.5.24 |
| **तारा योगिनी** | पुरन्दरदिने मासे वर्षे गृह्णाति | र.म.9.95 |
| **तालेश्वररसः (१)** | द्वादशं कर्षतालं च कूष्माण्डस्वरसे | र.म.6.243 |
| **तालेश्वररसः (२)** | सूतो द्वौ वल्गुजा त्रीणि कणा | र.म.6.252 |
| **तुत्थगुणाः** | तुत्थकं कटु सक्षारं कषायं विषदं लघु | र.म.3.78 |
| **तुत्थशोधनम्** | ओतोर्विष्ठासमं तुत्थं सक्षौद्रं | र.म.3.77 |
| **तुत्थाञ्जनम्** | तुत्थमाक्षिकसिन्धूत्थशिवाशङ्ख.. | र.म.8.12 |
| **त्रिगुणाख्यरसः** | गन्धकाद्द्विगुणं सूतं शुद्धं | र.म.6.174 |
| **त्रिनेत्राख्यरसः** | टङ्कणं हारिणं शृङ्गं स्वर्णं शुल्बं | र.म.6.215 |
| **दन्तादिवर्तिः** | दन्तैर्दन्तिवराहोष्ट्रगोहयाजखरोद्भवैः | र.म.8.11 |
| **दिनारिष्टकथनम्** | कनिष्ठाङ्गुलिपर्व स्यात्कृष्णं च | र.म.10.36 |
| **दूताज्ज्ञानम्** | दूतो रक्तकषायकृष्णवसनो दन्ती | र.म.10.4 |
| **दृष्टिदाञ्जनम्** | कृष्णसर्पवसा शङ्खः कतकं कट्फल. | र.म.8.7 |
| **धन्वन्तरिवन्दना** | क्षीराब्धेरुत्थितं देवं पीतवस्त्रं | र.म.6.1 |
| **धान्याभ्रककरणविधिः** | पादांशशालिसंयुक्तमभ्रं बद्ध्वाथ | र.म.3.40 |
| **ध्वस्तीकरणम्** | क्षौद्रेण च समं घृष्टं पुण्डरीकस्य | र.म.9.13 |
| **नयनामृतानञ्जनम्** | रसेन्द्रभुजगौ तुल्यौ ताभ्यां | र.म.8.6 |
| **नर्तकी योगिनी** | गात्रमाटेनमित्यादि विवर्णेन बलिं | र.म.9.79 |
| **नवज्वरेभसिंहरसः** | शुद्धं सूतं तथा गन्धं लोहं ताम्रं च | र.म.6.76 |
| **नागभस्मगुणाः** | एवं सप्तपुटं नागं सिन्दूरं जायते | र.म.5.43 |
| **नागमारणम् (१)** | त्रिभिः कुम्भपुटैर्नागो वासास्वर.. | र.म.5.39 |

| | | |
|---|---|---|
| **नागमारणम् (२)** | भूभुजङ्गमगस्तिं च पिष्ट्वा पात्रं | र.म.5.40 |
| **नागवङ्गशोधनम्** | नाग वङ्गौ च गलितौ रविदुग्धेन | र.म.5.38 |
| **नाराचरसः** | सूतटङ्कणतुल्यांशं मरिचं सूत.. | र.म.6.341 |
| **नित्योदितरसः** | मृतसूतार्कलोहाभ्रविषगन्धं समं समम् | र.म.6.322 |
| **निर्बीजबद्धपारदः** | रसस्तु पादांशसुवर्णजीर्णः पिष्टीकृतो | र.म.2.56 |
| **नेत्ररोगप्रणाशः** | भुक्त्वा पाणितलं घृष्ट्वा चक्षुषोर्यदि | र.म.8.19 |
| **नेत्रामयविनाशनाञ्जनम्** | सूतकं गन्धकोपेतं चाङ्गेरीरस.. | र.म.8.5 |
| **पञ्चाननज्वराङ्कुशरसः** | शम्भोः कण्ठविभूषणं समरिचं | र.म.6.79 |
| **पञ्चाननरसः** | सूतं गन्धकचित्रकं त्रिकटुकं मुस्ता | र.म.6.81 |
| **पलितनाशनम् (१)** | लोहमलामलकल्कैः सजपाकुसुमैर्नरः | र.म.8.26 |
| **पलितनाशनम् (२)** | काश्मर्या मूलमादौ सहचरकुसुमं | र.म.8.27 |
| **पारददोषाः** | नागो वङ्गोऽग्निचाञ्चल्य मसह्यत्वं | र.म.1.17 |
| **पारदनामानि** | शिवबीजं सूतराजः पारदश्च रसेन्द्रकः | र.म.1.14 |
| **पारदप्रकरणम्** | हरति सकलरोगान्मूर्छितो यो नराणां | र.म.1.5 |
| **पारदमहत्त्वम्** | यस्य रोगस्य यो योगो मुनिभिः | र.म.6.4 |
| **पारदलक्षणम्** | अन्तःसुनीलो बहिरुज्ज्वलो | र.म.1.15 |
| **पारदशोधनम् (२)** | कुमार्याश्च निशाचूर्णैर्दिनं सूतं | र.म.1.31 |
| **पारदशोधनम् (३)** | श्रीखण्डदेवदारू च काकतुण्डीजयाद्रवैः | र.म.1.32 |
| **पारदशोधनम् (४)** | दिनैकं मर्दयेत्पश्चाच्छुद्धं च | र.म.1.33 |
| **पारदशोधनविधिः** | अथातः सम्प्रवक्ष्यामि पारदस्य च | र.म.1.19 |
| **पारिभद्ररसः** | मूर्च्छितं सूतकं धात्रीफलं निम्बस्य | र.म.6.270 |
| **पीतली योगिनी** | भानुसंख्ये दिने मासे वर्षे गृह्णाति | र.म.9.91 |
| **पूजाविधिबलिदानम्** | नैर्ऋतीं दिशमाश्रित्य सप्तरात्रं बलिं | र.म.9.99 |
| **पूतना योगिनी** | तृतीये दिवसे मासे वर्षे गृह्णाति | र.म.9.76 |
| **पूर्णेन्दुरसः** | शाल्मल्युत्थैर्द्रवैर्मर्द्य पक्षैकं | र.म.6.296 |
| **प्रतापलङ्केश्वररसः** | अपामार्गस्य मूलस्य चूर्णं | र.म.6.95 |
| **प्रत्यञ्जनम्** | शुद्धे नागे द्रुते तुल्यं शुद्धसूतं | र.म.8.17 |
| **प्राणेश्वररसः** | शुद्धसूतं तथा गन्धं मृताभ्रं | र.म.6.67 |

| | | |
|---|---|---|
| **फलानि** | ये शुष्का विषमानिलैः क्षयरुजा.. | र.म.6.35 |
| **बद्धपारदलक्षणम्** | अक्षयी च लघुर्द्रावी तेजस्वी निर्मलो | र.म.2.53 |
| **बालतन्त्रम्** | बालतन्त्रं प्रवक्ष्यामि समासाद्रावणो.. | र.म.9.72 |
| **बिडाली योगिनी** | चतुर्थे दिवसे मासे वर्षे गृह्णाति | र.म.9.78 |
| **ब्रह्मरसः** | भागैकं मूर्च्छितं सूतं गन्धावल्गुज.. | र.म.6.265 |
| **भगसङ्कोचनम्** | वृद्धापि कामिनी कामं बालेव कुरुते | र.म.9.30 |
| **भद्रकाली योगिनी** | कामसंख्ये दिने मासे वर्षे गृह्णाति | र.म.9.93 |
| **भस्मेश्वररसः** | भस्मषोडशनिष्कं स्यादारण्योपलको.. | र.म.6.93 |
| **भूनागसत्त्वपातनम्** | सद्यो भूनागमादाय चारयेच्छिखिनं | र.म.3.66 |
| **मकरध्वजरसः** | पिप्पलीमधुसंयुक्तं ह्यनुपानं | र.म.6.277 |
| **मदनकामदेवरसः** | तारं वज्रं सुवर्णं च ताम्रं च | र.म.6.288 |
| **मदनोदयरसः** | शुद्धं सूतं समं गन्धं रक्तोत्पल.. | र.म.6.303 |
| **मनःशिलागुणाः** | कटुः स्निग्धा शिला तिक्ता कफघ्नी | र.म.3.75 |
| **मनःशिलाशोधनम्** | अगस्तिपत्रतोयेन भाविता | र.म.3.74 |
| **मन्थानभैरवरसः** | मृतं सूतं मृतं ताम्रं हिङ्गुपुष्कर.. | र.म.6.195 |
| **मन्दा योगिनी** | प्रथमे दिवसे मासे वर्षे गृह्णाति | र.म.9.73 |
| **महाज्वराङ्कुशरसः** | सूतं गन्धं विषं तुल्यं धूर्तबीजं | र.म.6.63 |
| **महोदधिरसः** | सूतकं गन्धकं लोहं विषं चापि | र.म.6.116 |
| **महोदधिवटी** | एकैकं विषसूतं च जाती टङ्कं द्विकं | र.म.6.122 |
| **माक्षिकगुणाः** | माक्षिकं तिक्तमधुरं मेहार्शःक्षय.. | र.म.3.84 |
| **माक्षिकमारणम्** | माक्षिकस्य चतुर्थांशं दत्त्वा गन्धं | र.म.3.82 |
| **माक्षिकशोधनम्** | सिन्धूद्भवस्य भागैकं त्रिभागं | र.म.3.80 |
| **मासारिष्टकथनम्** | अरश्मिबिम्बं सूर्यस्य वह्नेश्चैवांशु.. | र.म.10.25 |
| **मूर्छितपारदलक्षणम्** | कज्जलाभो यदा सूतो विहाय | र.म.2.54 |
| **मृगाङ्करसः** | स्याद्रसेन समं हेम मौक्तिकं | र.म.6.13 |
| **मृतपारदलक्षणम्** | आर्द्रत्वं च घनत्वं च चापल्यं | र.म.2.55 |
| **मृतसंजीवनी गुटिका** | शुद्धसूतं वज्रभस्म सत्त्वमभ्रक.. | र.म.7.12 |
| **मृतसंजीवनीरसः** | म्लेच्छस्य भागाश्चत्वारो जैपालस्य | र.म.6.82 |

| | | |
|---|---|---|
| **मेघडम्बररसः** | तण्डुलीयजलैः पिष्टं सूततुल्यं च | र.म.6.172 |
| **मेहवज्ररसः** | भस्म सूतं मृतं कान्तं शुल्बभस्म | र.म.6.217 |
| **रजतभस्मगुणाः** | शीतं कषायं मधुरमम्लं वात.. | र.म.5.23 |
| **रजतमारणम् (१)** | तारपत्रं चतुर्भागं भागैकं | र.म.5.18 |
| **रजतमारणम् (२)** | स्वर्णमाक्षिकगन्धस्य समं भागं तु | र.म.5.20 |
| **रजतमारणम् (३)** | पुटेन जारयेत्तारं मृतं भवति | र.म.5.21 |
| **रजतशोधनम्** | क्षयोन्मादगदार्तानां शमनं परमुच्यते | र.म.5.17 |
| **रत्नगर्भपोटलीरसः** | रसं वज्रं हेम तारं नागं लोहं च | र.म.6.6 |
| **रत्नगिरिरसः** | शुद्धं सूतं समं गन्धं मृतं स्वर्णाभ्र.. | र.म.6.40 |
| **रत्नगुणाः** | मुक्ताविद्रुमवज्रेन्द्रवैदूर्यस्फटिका.. | र.म.3.101 |
| **रत्नमारणम्** | रोचनाभिश्च गोमेदं वैडूर्यं | र.म.3.100 |
| **रत्नशोधनम्** | शुध्यत्यम्लेन माणिक्यं जयन्त्या | र.म.3.98 |
| **रविसुन्दररसः** | द्विभागतालेन हतं च ताम्रं रसं | र.म.6.89 |
| **रसकर्पूरः (१)** | ध्मातो भस्मत्वमायाति शुद्धः | र.म.2.41 |
| **रसकर्पूरः (२)** | पिष्टं पांशुपटुप्रगाढममलं वज्राम्बुना | र.म.2.44 |
| **रसकशोधनम्** | नृमूत्रैः खरमूत्रैश्च सप्ताहं रसकं | र.म.3.76 |
| **रसभस्मविधिः (१)** | रुद्ध्वा तद्भूधरे यन्त्रे दिनैकं | र.म.2.12 |
| **रसभस्मविधिः (२)** | श्वेताङ्कोलजटावारि मर्द्यः सूतो | र.म.2.14 |
| **रसमारणम्** | द्विपलं शुद्धसूतं च सूतार्धं | र.म.2.11 |
| **रसमूर्छनम् (१)** | मेघनादवचाहिङ्गुलशुनैर्मर्दयेद्रसम् | र.म.2.46 |
| **रसमूर्छनम् (२)** | षड्गुणे गन्धके जीर्णे मूर्छितो रोगहा | र.म.2.49 |
| **रसवैद्यमहत्त्वम्** | मुक्त्वैकं रसवैद्यं च लाभपूजा.. | र.म.6.3 |
| **रससिन्दूरनिर्माणम् (१)** | पलमात्रं रसं शुद्धं तावन्मात्रं | र.म.2.16 |
| **रससिन्दूरनिर्माणम् (२)** | गन्धकेन समः सूतो निर्गुण्डीरस.. | र.म.2.20 |
| **रससिन्दूरनिर्माणम् (३)** | सूतार्द्धं गन्धकं शुद्धं माक्षिको.. | र.म.2.21 |
| **रससिन्दूरनिर्माणम् (४)** | पक्वं संजायते भस्म दाडिमीकुसुमो.. | र.म.2.23 |
| **रससिन्दूरनिर्माणम् (५)** | स्फोटयित्वा पुनः स्थालीमूर्ध्वगं | र.म.2.28 |
| **रससिन्दूरनिर्माणम् (६)** | भागौ रसस्य त्रय एव भागा | र.म.2.31 |

| | | |
|---|---|---|
| **रससिन्दूरनिर्माणम् (७)** | पक्वमूषागतं सूतं गन्धकं | र.म.2.34 |
| **रससिन्दूरनिर्माणम् (८)** | आरक्तं जायते भस्म सर्वयोगेषु | र.म.2.36 |
| **रसायनाधिकारः** | प्रणम्य निर्भयं नाथं खेन्द्रदेवं | र.म.7.1 |
| **रसेन्द्रमङ्गलरसः** | तालसत्त्वं मृतं ताम्रं मृतं लोहं मृतं | र.म.6.223 |
| **राजमृगाङ्करसः** | रसभस्म त्रयो भागा भागैकं | र.म.6.36 |
| **राजरीतिघोषशोधनमारणम्** | राजरीति स्तथा घोषं ताम्रवन्मारयेत् | र.म.5.37 |
| **राजवल्लभरसः** | रसनिष्कैकगन्धैकं निष्कमात्रः | र.म.6.212 |
| **रामबाणरसः** | सूतकं गन्धकं चैव शाणं शाणं च | र.म.6.137 |
| **रौद्ररसः** | शुद्धं सूतं समं गन्धं मर्द्यं | र.म.6.320 |
| **लिप्सिता योगिनी** | एकादशे दिने मासे वर्षे गृह्णाति | र.म.9.90 |
| **लीलाविलासरसः** | रसो रविर्व्योम बलिः सुलोहं | र.म.6.193 |
| **लोकनाथरसः** | पलं कपर्दचूर्णस्य पलं पारदगन्धयोः | र.म.6.25 |
| **लोकेश्वरपोटलीरसः** | रसस्य भस्मना हेम पादांशेन | र.म.6.28 |
| **लोकेश्वरपोटलीरससेवनम्** | एष लोकेश्वरो नाम वीर्यपुष्टि.. | र.म.6.31 |
| **लोमशातनम् (१)** | निपतन्ति केशनिचयाः कौतुक.. | र.म.9.31 |
| **लोमशातनम् (२)** | मनःशिलातालकचूर्णलेपात्करोति | र.म.9.32 |
| **लोहनिरुत्थभस्म** | गन्धकं तुत्थकं लोहं तुल्यं खल्वे | र.म.5.64 |
| **लोहभस्म (१)** | शुद्धस्य सूतराजस्य भागो भागद्वयं | र.म.5.52 |
| **लोहभस्म (२)** | द्वादशांशेन दरदं तीक्ष्णचूर्णस्य | र.म.5.56 |
| **लोहभस्म (३)** | काकोदुम्बरिकानीरे लोहपत्राणि | र.म.5.57 |
| **लोहभस्म (४)** | तिन्दूफलस्य मज्जायां खड्गं | र.म.5.60 |
| **लोहभस्म (५)** | लोहं पत्रमतीव तप्तमसकृत्क्वाथे | र.म.5.62 |
| **लोहभस्मगुणाः** | कृष्णायसोऽथ शूलार्शःकुष्ठपाण्डुत्व.. | र.म.5.65 |
| **लोहभस्मपरीक्षा** | सर्वमेतन्मृतं लोहं ध्मातव्यं | र.म.5.63 |
| **लोहशोधनम्** | त्रिफलाष्टगुणे तोये त्रिफला षोडशं | र.म.5.50 |
| **लोहस्य पथ्यापथ्यविधिः** | कूष्माण्डं तिलतैलं च माषान्नं राजकं | र.म.5.67 |
| **वङ्गभस्मगुणाः** | वङ्गं तिक्तोष्णकं रूक्षमीषद्वात.. | र.म.5.49 |
| **वङ्गमारणम् (१)** | ग्रहणीकुष्ठमेहार्शःप्राणशोषविषापहः | र.म.5.44 |

| | | |
|---|---|---|
| **वङ्गमारणम् (२)** | वङ्गं सतालमर्कस्य पिष्ट्वा दुग्धेन | र.म.5.48 |
| **वङ्गेश्वररसः** | रसो विद्याधरो नाम गोदुग्धं च | र.म.6.332 |
| **वज्रकपाटरसः** | मृतसूताभ्रकं गन्धं यवक्षारं | र.म.6.158 |
| **वज्रजातयः** | श्वेतपीता रक्तकृष्णा द्विजाद्या वज्र | र.म.3.16 |
| **वज्रभस्म (३)** | त्रिःसप्तकृत्वः संतप्तं खरमूत्रेण | र.म.3.28 |
| **वज्रमारणम् (१)** | त्रिवर्षारूढकार्पासमूलमादाय पेषयेत् | र.म.3.25 |
| **वज्रमारणम् (२)** | कांस्यपात्रे तु भेकस्य मूत्रे वज्रं | र.म.3.27 |
| **वज्रशोधनम् (१)** | व्याघ्रीकन्दगतं वज्रं दोलायन्त्रे | र.म.3.23 |
| **वज्रशोधनम् (२)** | व्याघ्रीकन्दगतं वज्रं मृदा लिप्तं पुटे | र.म.3.24 |
| **वन्ध्याकरणम् (१)** | तण्डुलीयकमूलानि पिष्ट्वा | र.म.9.39 |
| **वन्ध्याकरणम् (२)** | काञ्जिकेन जपापुष्पं पिष्ट्वा पिबति | र.म.9.40 |
| **वन्ध्याकरणम् (३)** | धूपिते योनिरन्ध्रे तु निम्बकाष्ठेन | र.म.9.41 |
| **वन्ध्याकरणम् (४)** | धत्तूरं मल्लिकापुष्पं गृहीत्वा | र.म.9.42 |
| **वन्ध्यात्वनिवारणम् (१)** | नागकेशरपुष्पाणां चूर्णं गोसर्पिषा सह | र.म.9.43 |
| **वन्ध्यात्वनिवारणम् (१०)** | तेन सा लभते पुत्रं लक्षणाढ्यं | र.म.9.64 |
| **वन्ध्यात्वनिवारणम् (२)** | बीजानि मातुलुङ्गस्य दुग्धस्विन्ना | र.म.9.44 |
| **वन्ध्यात्वनिवारणम् (३)** | मातुलुङ्गस्य बीजानि कुमार्या सह | र.म.9.45 |
| **वन्ध्यात्वनिवारणम् (४)** | पिप्पली शृङ्गवेरं च मरिचं केशरं | र.म.9.46 |
| **वन्ध्यात्वनिवारणम् (५)** | यासां पुष्पागमो नास्ति ऋतुकाले च | र.म.9.48 |
| **वन्ध्यात्वनिवारणम् (६)** | अन्यद्योगवरं वक्ष्ये येन सा सफला | र.म.9.51 |
| **वन्ध्यात्वनिवारणम् (७)** | तेन सा लभते पुत्रं सत्यं चैव | र.म.9.55 |
| **वन्ध्यात्वनिवारणम् (८)** | हिङ्गु च शतवीर्या च दाडिमं सैन्धवं | र.म.9.58 |
| **वन्ध्यात्वनिवारणम् (९)** | अर्कमूलं प्रियङ्गु च कुसुम्भं | र.म.9.61 |
| **वराटिका** | पीताभा ग्रन्थिलाः पृष्ठे दीर्घवृत्ता | र.म.3.89 |
| **वराटिकागुणाः** | वराटा काञ्जिके स्विन्ना यामा | र.म.3.91 |
| **वराटिकाशोधनम्** | वराटा काञ्जिके स्विन्ना यामा | र.म.3.91 |
| **वर्तिप्रमाणम् (१)** | हरेणुमात्रां कुर्वीत वर्तिं तीक्ष्णाञ्जने | र.म.8.4 |
| **वातगजाङ्कुशरसः** | मृतं लोहं सूतगन्धं ताम्रतालक.. | र.म.6.182 |

| | | |
|---|---|---|
| **वातरिपुरसः** | सूतहाटकवज्राणि तारं लोहं च | र.म.6.178 |
| **विजयभैरवरसः** | सूतकं गन्धकं लोहं विषं चित्रक.. | र.म.6.165 |
| **विद्याधररसः** | गन्धकं तालकं ताप्यं मृतं ताम्रं | र.म.6.330 |
| **विद्वेषकरणम् (१)** | मृतकस्य तथा भस्म नारीरजः | र.म.9.33 |
| **विद्वेषकरणम् (२)** | मनःशिलातालकचूर्णलेपात्करोति | र.म.9.32 |
| **विमलशोधनम्** | जम्बीरस्य रसे स्विन्ना मेषशृङ्गीरसे | र.म.3.79 |
| **विषनामानि** | अष्टादशविधं ज्ञेयं कन्दजं | र.म.4.1 |
| **विषमारणम्** | समटङ्कणकं पिष्टं तद्विषं | र.म.4.11 |
| **विषमारणम्** | तुत्थेन टङ्कणेनैव म्रियते | र.म.4.33 |
| **विषलक्षणानि** | हारिद्रं हरितं चक्रं विषं हालाहला.. | र.म.4.3 |
| **विषवेगपरिहारः** | विषवेगांश्च विज्ञाय मन्त्रतन्त्रै.. | र.म.4.26 |
| **विषशोधनम्** | विषभागांश्च कणवत्स्थूलान् कृत्वा तु | र.म.4.12 |
| **विषसेवनम्** | विषस्य मारणं प्रोक्तमथ सेवां | र.म.4.14 |
| **वीर्यरोधिनी गुटिका** | नागवल्लीदलद्रावैः सप्ताहं | र.म.7.21 |
| **वीर्यस्तम्भनम् (१)** | कर्पूरं टङ्कणं सूतं तुल्यं मुनिरसं | र.म.9.1 |
| **वीर्यस्तम्भनम् (२)** | कृकलासस्य पुच्छाग्रं मुद्रिका | र.म.9.3 |
| **वीर्यस्तम्भनम् (३)** | मधुना पद्मबीजानि पिष्ट्वा नाभिं | र.म.9.4 |
| **वीर्यस्तम्भनम् (४)** | चटकाण्डं तु संग्राह्य नवनीतेन | र.म.9.5 |
| **वीर्यस्तम्भनम् (५)** | यावन्न स्पृशते भूमिं तावद्वीर्यं न | र.म.9.6 |
| **वीर्यस्तम्भनम् (६)** | कट्यामुपरि यद्बद्ध्वा शुक्रस्तम्भः | र.म.9.7 |
| **वीर्यस्तम्भनम् (७)** | रक्तापामार्गमूलं तु सोमवाराभि.. | र.म.9.9 |
| **वीर्यस्तम्भनम् (८)** | खसपलं शुण्ठीक्वाथः षोडशांशेन गुडेन | र.म.9.10 |
| **वीर्यस्तम्भनम् (९)** | सूरणं तुलसीमूलं ताम्बूलेन तु | र.म.9.11 |
| **वैक्रान्तमारणम्** | अष्टास्रिरष्टफलकः षट्कोणो मसृणो | र.म.3.31 |
| **वैक्रान्तशोधनम्** | वैक्रान्तं वज्रवच्छुद्धं ध्मातं तं | र.म.3.33 |
| **वैक्रान्तसत्त्वपातनम्** | वैक्रान्तं वज्रकन्दे च पेषयेद् | र.म.3.35 |
| **शकुनी योगिनी** | नर्तकीति समाख्याता योगिनी तस्य | र.म.9.80 |
| **शङ्खाद्यञ्जनम्** | शङ्खस्य भागाश्चत्वारस्तदर्धेन | र.म.8.8 |

| | | |
|---|---|---|
| **शर्वरी योगिनी** | चक्षुःपीडेङ्गितं तस्यै पश्चिमे | र.म.9.96 |
| **शिलाजतुगुणाः** | शिलाजतु भवेत्तिक्तं कटूष्णं च | र.म.3.96 |
| **शिलाजतुशोधनम्** | गोदुग्धत्रिफलाभृङ्गद्रवैः पिष्टं | र.म.3.95 |
| **शिष्यलक्षणम्** | शिष्यो निजगुरोर्भक्तः सत्यवक्ता | र.म.1.13 |
| **शीतभञ्जीरसः (१)** | पारदं रसकं तालं तुत्थं टङ्कण.. | र.म.6.47 |
| **शीतभञ्जीरसः (२)** | दन्तीक्वाथेन संमर्द्य रसो ज्वरहरः | र.म.6.51 |
| **शीतारिरसः** | सूतकं टङ्कणं गन्धं शुल्बचूर्णं समं | र.म.6.54 |
| **शुक्लीकरणम्** | वज्रीक्षीरेण सप्ताहं सुश्वेतान् | र.म.8.28 |
| **शुष्काशिवा योगिनी** | पञ्चरात्रं बलिं तस्यै वारुण्यां दिशि | र.म.9.82 |
| **शूलगजकेसरीरसः** | शुद्धसूतं द्विधा गन्धं यामैकं | र.म.6.260 |
| **श्रीगणपतिस्तुतिः** | यद्गण्डमण्डलगलन्मधुवारिबिन्दु - | र.म.1.1 |
| **श्रीशारदास्तुतिः** | इन्दीवरी भवति यच्च रणारविन्द- | र.म.1.2 |
| **श्वेतारिरसः** | शुद्धं सूतं समं गन्धं त्रिफलाभ्रं च | र.म.6.271 |
| **षड्गुणजारणम्** | प्रक्षिप्य तोयं मृत्कुण्डे तस्योपरि | र.म.2.3 |
| **षण्ढत्वकरणम्** | अनुराधासुनक्षत्रे लाङ्गलीमूलिका | र.म.9.14 |
| **षण्ढत्वनाशनम्** | तिलगोक्षुरयोश्चूर्णं छागीदुग्धेन | र.म.9.16 |
| **संज्ञाकरणरसः** | रसं च गन्धकं चैव धत्तूरफलजैर्द्रवैः | र.म.6.126 |
| **सन्निपातभैरवरसः** | ताम्रगन्धरसश्वेतस्पन्दामरिचपूतनाः | र.म.6.91 |
| **सबीजबद्धपारदः** | बीजीकृतैरभ्रकसत्त्वहेमताराऽर्ककान्तैः | र.म.2.57 |
| **सर्वसत्त्वपातनविधिः** | गुडपुरस्तथा लाक्षा पिण्याकं टंकणं | र.म.3.62 |
| **सर्वेश्वररसः** | मृतताम्राभ्रलोहानां हिङ्गुलं च पलं | र.म.6.235 |
| **सुखप्रसवोपायः (१)** | मातुलुङ्गस्य मूलानि मधुकं | र.म.9.70 |
| **सुखप्रसवोपायः (२)** | तुषाम्बुपरिघृष्टेन कन्देन परिलेपयेत् | र.म.9.71 |
| **सुनन्दा योगिनी** | द्वितीये दिवसे मासे वर्षे गृह्णाति | र.म.9.74 |
| **सुवर्णजारणम्** | शास्यो रसः स्यात्पटुशिग्रुतुत्थैः | र.म.2.7 |
| **सेवनविधिः** | इमं नवज्वरे दद्यान्माषमात्रं रसस्य | र.म.6.44 |
| **सेवनविधिः** | दद्यान्नवज्वरे तीव्रे सोष्णं वारि | र.म.6.73 |
| **सेवनविधिः** | घनसारेण युक्तेन चन्दनेन | र.म.6.84 |

| | | |
|---|---|---|
| **सेवनविधिः** | सचन्द्रचन्दनरसोल्लेपनं कुरु | र.म.6.109 |
| **स्तनदृढीकरणम् (१)** | अन्यद्योगवरं वक्ष्ये विद्वेषकरणं | र.म.9.35 |
| **स्तनदृढीकरणम् (२)** | तयोर्धूलिं समादाय हन्यते योषितां | र.म.9.36 |
| **स्त्रीद्रावणम्** | एक एव महाद्रावी मालतीसम्भवो | र.म.9.18 |
| **स्त्रीवशीकरणम्** | मधुसैन्धवसंयुक्तं पारावतमल.. | र.म.9.22 |
| **स्त्रीवशीकरणम् (१)** | चन्दनं तगरं कुष्ठं प्रियङ्गुं | र.म.9.26 |
| **स्त्रीवशीकरणम् (२)** | ॐ नमो भगवते उमामहेश्वराय | र.म.9.28 |
| **स्त्रीवशीकरणयन्त्रम्** | वृत्तमध्यस्थितं नाम तद्बाह्ये ह्रीं | र.म.9.24 |
| **स्थूलीकरणम्** | वराहवसया लिङ्गं मधुना सह | र.म.9.12 |
| **स्वर्णक्षीरीरसः** | हेमाह्वां पञ्चपलिकां क्षिप्त्वा | र.म.6.257 |
| **स्वर्णगुणाः** | हेमपत्रं च तेनैव म्रियते क्षणमात्रतः | र.म.5.15 |
| **स्वर्णभस्म (१)** | शुद्धसूतसमं हेम खल्वे कुर्याच्च | र.म.5.5 |
| **स्वर्णभस्म (२)** | कृत्वा कण्टकवेध्यानि स्वर्णपत्राणि | र.म.5.7 |
| **स्वर्णभस्म (३)** | रसस्य भस्मना वाथ रसैर्वा | र.म.5.8 |
| **स्वर्णभस्म (४)** | गलितस्य सुवर्णस्य षोडशांशेन | र.म.5.12 |
| **स्वर्णभस्म (५)** | एवं मुनिपुटैर्हेम नोत्थानं लभते पुनः | र.म.5.14 |
| **स्वर्णशोधनम्** | मृत्तिकामातुलुङ्गाम्लैः पञ्चवासर.. | र.म.5.4 |
| **हरतालमारणम्** | पलमेकं शुद्धतालं कौमारीरस.. | र.म.3.72 |
| **हरतालशोधनमारणम्** | शुद्धः स्यात्तालकः स्विन्नः कूष्माण्ड | र.म.3.70 |
| **हिङ्गुलगुणाः** | तिक्तोष्णं हिङ्गुलं दिव्यं रसगन्धक. | र.म.3.94 |
| **हिङ्गुलशोधनम्** | मेषीक्षीरेण दरदमम्लवर्गैश्च भावितम् | र.म.3.93 |
| **हिङ्गुलेश्वररसः** | तुल्यांशं चूर्णयेत्खल्वे पिप्पलीं | र.म.6.46 |
| **हेमसुन्दररसः** | मृतसूतस्य पादांशं हेमभस्म | र.म.7.9 |

[redacted]

eBook Publication Pvt. Ltd.

Free Download, Borrow, and Streaming

# eBook Publication Pvt. Ltd.

## प्रकाशनानि

### आयुर्वेदग्रन्थाः

- रसेश्वरदर्शनम्
- रसेश्वरदर्शन,
  मूळ संस्कृत,शब्दार्थ आणि मराठी भाषांतर
- रसमञ्जरी
- रसमञ्जरी सन्दर्भकोशः
- रसमञ्जरी वनस्पतिकोशः
- रसतरङ्गिणी
- रसतरङ्गिणी सन्दर्भकोशः
- रसतरङ्गिणी वनस्पतिकोशः
- रसतरङ्गिणी
  मूळ संस्कृत, शब्दार्थ आणि मराठी भाषांतर

### व्याकरणम्

- पाणिनीयं लिङ्गानुशासनम्
- शान्तनवाचार्यप्रणीतः फिटसूत्रपाठः
- तिङन्तरूपावलिः, प्रथमः भागः - दशमः भागः
- पाणिनीयशिक्षा
- आपिशलशिक्षा
- ऋग्वेदप्रातिशाख्यम्

### उपनिषद्ग्रन्थाः

- अमृतनादोपनिषद्
- आरुणिकोपनिषद्
- कलिसन्तरणोपनिषद्
- कृष्णोपनिषद्
- गर्भोपनिषद्
- जाबाल्युपनिषद्
- बह्वृचोपनिषद्
- ब्रह्मबिन्दूपनिषद्
- वासुदेवोपनिषद्
- सावित्र्युपनिषद्

### काव्यशास्त्रग्रन्थाः

- काव्यालंकार, प्रथम परिच्छेद,
  मूळ संस्कृत, मराठी भाषांतर, पदार्थ व विवेचक टीपांसह

Email: publicationebook@gmail.com

Website: https://archive.org/details/@ebook_publcation